Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 06, (नवंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 26

किसानों के लिए जल संरक्षण के व्यावहारिक उपाय

बलजीत सिंह गाट[1], राम नरेश[1] एवं नरेंद्र कुमार[2]

[1]मृदा एवं जल अभियांत्रिकी विभाग,
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
[2]कृषि विज्ञान केंद्र, सिरसा,
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, भारत।

Email Id: – baljeetgaat12@gmail.com

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता लगातार कम होती जा रही है। भूजल स्तर गिर रहा है और वर्षा भी अनियमित होती जा रही है। इसलिए हर किसान और नागरिक का दायित्व है कि पानी का उपयोग सोच–समझकर किया जाए। खेती में 70 से 80 प्रति ात पानी उपयोग होता है, इसलिए कृषि में पानी की बचत करना सबसे महत्वपूर्ण है।

1. आवश्यकता अनुसार सिंचाई

- नमी होने पर सिंचाई टालें।
- समय पर और उचित मात्रा में सिंचाई से 20 – 25 प्रतिशत पानी की बचत।
- उदाहरण: गेहूँ में पहली सिंचाई जड़ निकलाव अवस्था पर आवश्यक।

2. खेत में मेड़ और बाँध बनाना

- पानी खेत में रोककर मिट्टी में समाने देना।
- बॉर्डर गलियाँ और खालों से पानी समान रूप से पहुँचना।
- गहराई में रिसाव कम होना।

3. आधुनिक सिंचाई पद्धतियाँ

- टपक सिंचाई जड़ों तक पानी, 40 – 50 प्रतिशत पानी बचत, फल–सब्जी हेतु उत्तम।
- **स्प्रिंकलर सिंचाई :** वर्षा जैसी, रेतीली भूमि व सब्जियों के लिए उपयुक्त।
- **फरो सिंचाई :** कपास, मक्का, गन्ने जैसी पंक्तिबद्ध फसलों हेतु।

4. फसल चयन व फसल पद्धति

- कम पानी वाली फसलें (बाजरा, मूंग, चना) लगाएँ।
- फसल चक्र से पानी व उर्वरता की बचत।

5. खरपतवार नियंत्रण व वाष्पीकरण कम करना

- खेत को खरपतवार मुक्त रखें।
- मल्चिंग से नमी लंबे समय तक बनी रहती है।
- गर्मियों में अत्यंत उपयोगी।

6. भूमि समतलीकरण (Laser Levelling)

- खेत समतल करने से पानी समान रूप से फैलता है।
- 20 – 25 प्रतिशत पानी बचत व 10 – 15 प्रतिशत उत्पादन वृद्धि।

7. वैज्ञानिक सिफारिशों का पालन

- मृदा नमी देखकर सिंचाई का निर्णय।
- फसलों के संवेदनशील चरणों पर सिंचाई अनिवार्य।

8. पाइप व नालियों का रखरखाव

- रिसाव रोकें, नियमित मरम्मत करें।
- पक्की नालियों से पानी की हानि घटेगी।

9. वर्षा जल संचयन

- तालाब, जोहड़, चेक डैम, परकोलेशन टैंक बनाना।
- वर्षा जल से भूजल रिचार्ज व खेत में उपयोग।

निष्कर्ष:

कृषि प्रधान देशों में सिंचाई जल की कमी एक बड़ी समस्या बनती जा रही है, इसलिए कृषि में जल संरक्षण अनिवार्य है। खेत स्तर पर किसान बड़ी मात्रा में पानी बचा सकते हैं, जैसे नमी के आधार पर सिंचाई, खेत में मेड़ों और बाँधों का निर्माण, ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी आधुनिक सिंचाई तकनीकों का उपयोग, उचित फसलों का चयन, खरपतवारों का नियंत्रण, भूमि समतलीकरण और पाइप–नालियों का उचित रखरखाव। साथ ही, भूजल रिचार्ज और वर्षा जल संचयन जैसे प्रयास जल उपलब्धता को स्थायी बनाते हैं। यदि किसान और समाज मिलकर जिम्मेदारी से जल उपयोग पर ध्यान दें, तो न केवल जल संकट को कम किया जा सकता है, बल्कि लाभ, प्राकृतिक संसाधनों की स्थायित्व और फसली उत्पादकता में सुधार भी सुनिश्चित किया जा सकता है।